**International Journal of Academic Research and Development**
**ISSN: 2455-4197**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.academicsjournal.com**
**Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 999-1000**

# निराला की कविता में दलित–चेतना

**Renu**
B.Ed teacher, GGSSS Sindhvi Khera, Jind, Haryana, India

**सारांश**
निराला का काव्य जीवन के श्रेष्ठतम् मूल्यों से अनुप्राणित हैं। निराला ने समाज में पीडित, शोषित, दलित लोगों का वर्णन किया है। वे शोषकों पर व्यंग्य कसते हैं तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। उन्होंने विधवाओं की पीडा को समझा है तथा वे उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं। वे अपनी कविता ष्वह तोडती पत्थर में मजदूर स्त्री का बडा मर्मस्पषी चित्रण करते हैं। उनकी लेखनी ने जातिवाद तथा संप्रदायवाद पर तीक्ष्ण प्रहार किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि निराला की कविताओं में दलितों का उत्पीड़न सर्वत्र उपलब्ध हैं। वे उनके प्रति सहानुभूति तथा संवेदना रखते हैं। संक्षित रुप से निराला को एक विद्रोही कवि भी कहा जा सकता है।

**मूल शब्दः** दलित, विद्राह, प्रगतिषील, अत्याचार।

## परिचय

समाज की कठोर वास्तविकता का साक्षात्कार एवं पहचान कराने वाला साहित्य आज दलित साहित्य के नाम से विभूषित है। समाज में व्याप्त भेदभाव, अस्पृष्यता एवं धूआधूत को मिटाकर एक वर्गरहित समाज की संकल्पना ही दलित साहित्य का लक्ष्य है। इसी संकल्पना को लेकर हिन्दी में दलित साहित्य की विभिन्न विधाओं को साहित्यकारों ने विषेष महत्व देने का प्रयास किया है। एक काव्यास्वादिका होने के कारण मैंने इस आलेख में कविता के पक्ष को विषेष महत्व देने का प्रयास किया है। इस आलेख में निराला जी के काव्य में दलित लोगों की उत्पीड़ना को अभिव्यक्त कर पाठकों के समक्ष रखा है। निराला जी ने मानव की प्रतिष्ठा एंव मानव से मानव की मुक्ति, समानता और न्याय की माँग एवं सफलता को प्रतिपादन किया ळें

जैसा कि हम सभी जानते हैं दलित साहित्य विद्रोह का साहित्य है, जिससें प्राचीन काल से शोषण के खिलाफ चल रहे विद्रोह का तूफान है, जिससे पीड़ा के खिलाफ संकलित आक्रोष की लहर प्रदर्षित हो रही है। इनके काव्य में यही स्वतंत्र अस्तित्व का तूफान हमें देखने को मिलता है। निराला जी का एक प्रगतिषील काव्यकार के रूप में अपना विषिष्ट स्थान है। इनकी प्रगतिषील चेतना का प्रकटन भिक्षुक, विधवा, वह तोड़ती पत्थर जैसी कविताओं में देखा जा सकता है। डा0 दूघनाथ सिंह के शब्दों में श्इन कविताओं को जैसे निराला अपनी छाती से चिपकाए हुए हैं। अपना करूणा के सतत रूप में आर्द्र, अभिभूत और आप्लावित हुए हैं। एक विराट अष्वत्थ की तरह निराला का संपूर्ण व्यक्तित्व इन पर छाया हुआ है। साथ ही विषय वस्तु के रूप में उपेक्षित हुए भी विधवा, तोडती पत्थर, दीन, भिक्षुक के पात्रों के सहने में एक विचित्र की उच्चाषयता के दर्षन होते हैं।श

जीवन की कठोर वास्तविकताओं से जूझ कर कुकुरमुत्ता उगता है और अपने व्यक्तित्व को बनाए रखता है। वह स्वयं उगता है। उगाया नहीं लगता। गर्म पकौड़ी पर ब्राह्मण की पकायी कचौड़ी के उपर पकौड़ी की प्रतिष्ठा करके उन्होंने तथा कथित ब्राह्मण वर्ग पर व्यंग्य चलाया है। यहाँ कवि परोक्ष रूप से जातिगत समस्याओं पर प्रकाष डालता है।

गरम पकौडी
ऐ गरम पकौडी
तेल की भुनी
नमक मिर्च की मिली
अरी तेरे लिए छोड़ी
ब्राह्मण का पकायीं।
मैंने घी की पकोड़ी।

निराला जी ने भारतीय समाज की विधवाओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। जिसका रूप हम विधवा में देख सकते हैं। विधवा में उन्होंने भारतीय समाज में विधवाओं पर होने वाले शोषण एवं अत्याचारों का यथार्थ शोषण किया है।

कौन उसे धीरज दे सके
दुख का भार कौन ले सके
यह दुख वह जिसका नहीं कुछ छोर है।
दैव अत्याचार कैसा किसी ने अश्रु जल
या किया करते रहे सबका विकल।

वह तोड़ती पत्थर की युवती मजदूर है, साहसी है, मेहनती है जो यहां गुरू हथौड़ा लेकर पत्थर पर प्रहार करने वाली मजदूरनी युवती में स्वप्न नहीं, मोह नही है। इनके काव्य में तोड़ती पत्थर में उसके आंखो से आंसू नही, माथे पसीना गिर रहा है। इनके काव्य में युवती मजदूर हथौड़े से पत्थर मारकर पत्थर तोड़कर वह समाज से अपना आक्रोष प्रकट करती हुई नजर आती है।

देखा मुझे तो एक बार
उस भूवन की और देखा छिन्न तार
देखकर कोई नहीं।
देखा मूझे उस दृष्टि से
जो मार खाई रोयी नहीं
सजा सजह सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह कांपी सुधर

ढालक माथे से गिरे सीकर
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा
मैं तोड़ती पत्थर।

इनके काव्य साहित्य ने जाति से धर्म को ऊपर उठाया ही नहीं गयी बल्कि सारे ष्षोषित की पीड़ा को वाणी देकर ष्षोषक के प्रति आक्रोष प्रकट किया गया है। निराला जी की विधवा और तोड़ती पत्थर दलित नारी का प्रतिनिधित्व करती है। निराला जी ने प्रेम संगीत नामक अपनी कविता में परंपरा विरूद्ध कहारिन लड़की से बाहम्ण के लड़के के प्रेम संबध की संकल्पना करते हुए प्रकट होते है जिसमें व जातिगत रूढियो से मुक्त होने का आहवान देते है।

कोयल से काली अरे
चाल नहीं उसकी मतवाली
व्याह नहीं हुआ तभी भड़का
दिल मेरा , मैं आहें भरता हूँ
रोज आकर जगाती है सबको
ले जाती है मटका बड़का
मैं देख–देखकर धीरज धरता हूं।

उच्च कुल जाति संपन्न ब्राहम्ण के लड़के का विपन्न नीच जाति की कन्या का स्वर दलित चेतना के निकट होकर उभरा है, जिसे निराला जी अपनी कविता के माध्यम से निम्न वर्ग जाति के यथार्थ जीवन के दर्पण को परिपक्वता के साथ साथ, भारत की साधारण जनता के जीवन को निकट से देखकर, उसके उन्नयन को काव्य का लक्ष्य बनाने वाले निराला जी की अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। हिंदी काव्य में जातिवाद और सम्प्रदायवाद के विरूद्ध आवाज उठाने वाले कवियों में सर्वप्रथम नाम निराला जी का आता है। उन्होने अपने निजी व्यक्तित्व से जुड़ी अभिव्यक्ति का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। इनके इर्द गिर्द परिवेष में हो रही जाति संकीर्णता और छुआछूत का इन्होने वर्णन अपनी कविता में किया है । इस समय के समाज में फैले भ्रष्टाचार को देखकर ये प्रगतिषील कविता लिखने के लिए तत्पर हो गए। ये अपने ''प्रेम संगीत'' में इसी जातिवाद का खंडन करते हुए कहते है कि–

ब्राह्मण का लड़का मैं
उसको प्यार करता हूं
जाति की कहारिन वह
मेरे घर की पनहारिन वह।

1935 के बाद आत्म संधर्ष ने उनके काव्यबोध में एक परिवर्तन लाया। जितना ही यथार्थ की कटुटा और दुख की गहराई प्रत्यक्ष होती थी –उतनी ही रूमानी कल्पनाएं निस्सार प्रतीत होती थी। उनके नवीन ष्षब्द और प्रयोगषील गधात्मक कविता और भाषा संगठन आज की दलित कविता को ताजगी दिलाती है। इनके कुछ काव्यो में भाषा देषज है तथा प्रवाहपूर्ण है।
नये पत्ते में जन भाषा का रूप देखा जा सकता है।

बाग के बाहर पड़े थे झोपड़े दूर से जो दिख रहे थे अध गड़े
जगह गंदी, रूका, सड़ता हुआ पानी
मोरियों में जिन्दगी की लनतरानी
बिलबिलाते कीड़े, बुखरी हड्डियॉ
लेत्तरो की परो की थी गड्डियां
कहीं मुर्गी कहीं अण्डे
धूप खाते हुए कण्डे।

**संदर्भ ग्रन्थ**


1. निराला की साहित्य साधना–डॉ. रामविलास षर्मा
2. निराला कास्य की छवियां –राजकमल प्रकाषन
3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–डॉ. सीमा जैन
4. निराला रचनावली–राजकमल प्रकाषन
5. निराला की कविताएं मूल्याकंन और मूल्यांकन सं परमानंद श्रीवास्तव
6. निराला – इन्द्रनाथ मदान
7. निराला नव मूल्यांकन–रामरतन भटनागर